folder - 044

बिलासपुर विश्वविद्यालय

बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

पाठ्यक्रम

समाज विज्ञान - संकाय
[illegible] एवं पाठ्यक्रम
एम. ए. (अंतिम) राजनीतिशास्त्र

परीक्षा : 2014

:: प्रकाशक ::

कुलसचिव बिलासपुर विश्वविद्यालय

बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

(i) There shall be only two Division for such candidates the First Division and Second Division .The Marks required for obtaining these division shall be the same as prescribed in the ordinance i.e. examinees who are successful in Final of the Examination and have obtained 60% or more aggregate of the marks in Previous and Final Examination taken together shall be placed in the First Division and Examinees who are successful in Final Examination and have obtained less than 60% but not less than 48% of aggregate marks in previous and Final examination taken together shall be placed in the Second Division

(ii) The result of the candidates obtaining less than 48% of the aggregate marks in Previous and Final Examination taken together shall not be declared

(iii) Candidates shall have the option to appear at both the previous and final examination in one and the same year and for being successful at the examination. the candidates shall obtain 48% of the aggregate marks.

Provided that such candidates who want to appear in previous and final examination separately shall have to obtain minimum aggregate required for the previous examination but he will have to obtain atleast 48% in the aggregate of previous and final examination taken together or else his result will be cancelled.

(iv) The Syllabus for the examination shall be same as prescribed for the year in which the examination is held.

(v) Not more than two attempt shall be allowed to such a candidate failure of appearance at the examination after permission has been accorded by the University shall be counted as an attempt.

Provided however such candidates who want to appear at the previous and final examination separately will be allowed only one attempt of the previous examination and two attemps in the final examination.

(vi) Candidates who wish to avail the opportunity given in fore going paras will have to apply for permission as required in the Ordinance relating to admission of non- collegiate students to the University examination along with regisitration fee.

(vii) In case, a student Improves his division under provision of this para. The fresh Degree will be issued after cancelling his first Degree.

एम .ए. अंतिम राजनीति शास्त्र

सत्र 2005 – 06 से प्रभावशील

(1) एम.ए. अंतिम राजनीति शास्त्र में कुल चार सैद्धांतिक प्रश्न पत्र होगें । प्रथम प्रश्न पत्र अनिवार्य होगा । वैकल्पिक तीन समूहों में से किसी एक समूह के तीन प्रश्न पत्र का चयन करना होगा । प्रत्येक प्रश्न पत्र 100 अंको का होगा । एम.ए पूर्व में 60 प्रतिशत् अथवा उससे अधिक अंक प्राप्त होने पर तीन वैकल्पिक प्रश्न पत्रो में से किसी एक प्रश्न पत्र के विकल्प के रूप में लघु शोध प्रबंध लेने की पात्रता होगी । लघु शोध प्रबंध का विषय वैकल्पिक प्रश्न पत्र के रूप मे लिये जाने वाले समूह से संबंधित होगा (2) 50 अंक के मौखिक परीक्षा में प्रत्येक परीक्षार्थी को उत्तीर्ण होना आवश्यक होगा मौखिक में उत्तीर्ण होने के लिए न्यूनतमए 20प्रतिशत् अंक आवश्यक होगे, यह नियम स्वाध्यायी छात्रो पर भी लागू होगा ।

M.A. FINAL (POLITICAL SCIENCE)

COMPULSORY PAPER - I M.M:100

PUBLIC ADMINISTRATION & RESEARCH METHODOLOGY.

COURSE RETIONALE :

PUBLIC ADMINISTRATION : This paper intends to study Public Administration in its larger systematic milieu, to identify key interacting factors in its apparatus and actors, and to develop understanding of measures that affect its operating efficiency and strengthen its functional utility. It covers the study of the development of bureaucracy and its significant contributions to the process of developn ent, highlighting the importance and imperatives of the study of developmental bureaucracy.

RESEARCH METHODOLOGY : This paper is a basic instruction to the process and methods of empirical research for achieving scientific knowledge in Political Science .An attempt is made to relate Social Science Research Methods to other course in syllabus of Political Science. The criticisms of different mehtods and schools are included. There is a need to teach the methods of data collection sample survey. preparation of bibliography and questionnaire. writing of report. dissertation and thesis.

Course Content

PAPER -I (PUBLIC ADMINISTRATIVES & RESEARCH METHOD)

1. Public Administration - Definition. Nature. Scope. Difference with private Administration.
2. Different Approaches Behavioural. Comparative Decision making. Developmental Administrative. Approach.
3. Theories of organisation hierrehy. spare of control. unity of commond.

4. Chaio Chief Executive. Line & Staff agency.
5. Department,Independent Regulatory Commission.Public Corporation.
6. Personnel management Precruitment. Training. Promotion. Service Condition Bureaucracy.
7. Financial Administration - Theories and Process of Budget making. Comptroller and Auditor General of India.
8. Delegated Legislation, Public Relation. Corruption in Administration and remedies.
9. Scientific study of Political Science.
10. Behaviovral Revolution and criticism.
11. Scientific Research Method - Hypothesis. Concepts and Variable.
12. Tools and techniques of Data Collection Sampling Observation. Question are and interview.
13. Data Processing - Condification. Tabulation and Analysis, Use of Computer.
14. Statistical Analysis. - Mean, Mode, Mediam.
15. Report writing- Forme, reterence and footnotes.

एम .ए. अंतिम राजनीति शास्त्र

सत्र 2005 – 06 से प्रभावशील

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्राप्त मॉडल पाठ्यक्रम पर आधारित अनिवार्य प्रश्न पत्र –एक

लोक प्रशासन एवं शोध प्रविधि ।

पाठ्यक्रम औचित्य .

लोक प्रशासन – यह प्रश्न पत्र लोक प्रशासन को व्यापक व्यवस्थित पर्यावरण में समझने का प्रयास है. जिससे इसके उपकरणों एवं कर्ताओं के मुख्य अन्तः क्रियात्मक कारकों की पहचान की जा सकें तथा उन उपायों की समझ विकसीत की जा सके जो इसकी क्रियात्मक दक्षता को प्रभावित करते है । एवं कार्यात्मक उपयोगिता को शक्ति प्रदान करते है । इसमें नौकरशाही के विकास तथा विकास की प्रक्रिया में इसके उल्लेखनीय योगदान को समझने का प्रयास किया गया है । साथ ही विकासात्मक नौकरशाही के अध्ययन को भी ध्यान में रखा गया है ।

शोध प्रविधि – यह प्रश्न पत्र राजनीति विज्ञान में वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त करने के लिये इन्द्रियानुभाविक अनुसंधान की प्रक्रिया एवं पद्धतियों को रेखांकित करता है । सामाजिक विज्ञान अनुसंधान पद्धातियों को राजनीति विज्ञान से संबद्ध करने का यह प्रयास है । उससे विभिन्न पद्धतियों एवं विचारों को, आलोचना को भी सम्मिलित किया गया है ।

सामाग्री संकलन,प्रदार्श सर्वेक्षण, संदर्भ ग्रंथ सूची एवं प्रश्नावली का निर्माण,

प्रतिवेदन लेखन, लघुशेध एवं शोध प्रबंध लेखन के अध्यापन की आवश्यकता है ।

प्रश्न–पत्र 1 लोक प्रशासन एवं शोध प्रविधि

विषय सूची

अध्याय 1. लोक प्रशासन परिभाषा, प्रकृति क्षेत्र, निजी प्रशासन से अन्तर

अध्याय 2. अध्ययन के उपागम – व्यावहारिकवादी , तुलनात्मक , निर्णय –निर्माण, विकासवादी प्रशासनिक उपागम ।

अध्याय 3. संगठन के सिद्धांत – पदसोपान, नियंत्रण का क्षेत्र, आदेश की एकता, समन्वय, प्रत्यायोजन, केन्द्रीकरण विकेन्द्रीयकरण ।

अध्याय 4. मुख्य कार्यपालिका, सूत्र एवं स्टाफ अभिकरण ।

अध्याय 5. विभाग, स्वतंत्र नियामकीय आयोग, लोकनिगम ।

अध्याय 6. कार्मिक प्रशासन – भर्ती, प्रशिक्षण , पदोन्नति, नौकरशाही ।

अध्याय 7. वित्तीय प्रशासन – बजट, निर्माण, के सिद्धांत एवं प्रक्रिया लेखाकन, नियंत्रक, एवं महालेखा परीक्षक ।

अध्याय 8. प्रदत्त विधायन, लोक सम्पर्क, प्रशासन में भ्रष्टाचार और सुधार के उपाय ।

अध्याय 9. राजनीति विज्ञान का वैज्ञानिक अध्ययन ।

अध्याय 10. व्यवहारवादी क्रांति एवं उसकी आलोचना ।

अध्याय 11. वैज्ञानिक शोध प्रविधि प्राकल्पना (भ्लचमजीमेपे) सम्प्रत्यय (ब्वदबमचज) एवं चर (टंतपंइसम)

अध्याय 12. तथ्य संकलन की तकनीक एवं उपकरण –प्रतिवयन (‘उचसपदह) पर्यवेक्षण (वइेमतअंजपवद) प्रश्नावली एवं साक्षात्कार ।

अध्याय 13. सामग्री संसाधन एवं विश्लेषण – संकेतीकरण (ब्वकपपिबंजपवद) सारणीयन (जंइनसंजपवद) विश्लेषण एवं कम्प्यूटर का प्रयोग ।

अध्याय 14. सांख्यकीय विश्लेषण – समान्तर,माध्य , मध्यांक, बहुलक,(मीन, मोड, मीडियन)

अध्याय 15. प्रतिवेदन लेखन – स्वरूप, संदर्भ एवं फुटनोट्स ।

READINGS :

- P.H. Appliby. Policy and Administration , Ababana. University of Abama. Press, 1957.
- A. Avasthi and S.R. Maheshwari, Public Administration , Agra, Laxmi, N. Aggrawal . 1996.
- P.R. Dubashi, Recent Trends in Public Administration, Delhi Kaveri Books, 1995.
- J.M. Gaus. A theory of Organisation in Public Administration,Chicago. University of Chicago Press. 1936.

* E.N. Gladden. The Essential of Public Administration . London. Staples Press. 1958.
* F.W. Riggs. The Ecology of Administration . Bombay. Asia Publishing House.1961.
* M.Weber. The Theory. of Organization - Reading in Public Administration . New York. harper and Row. 1983.
* जियाउद्दीन खाँ एवं एस एल वर्मा: प्रशासनिक विचार धारायें भाग 1 और 2 कॉलेज बुक डिपो, जयपुर ।
* इंद्रजीत कौर लोकप्रशासन, साहित्य भवन, आगरा
* रूकमणी बसु – लोक प्रशासन , संकल्पनाएँ एवं सिद्धांत, जवाहर पब्लिकेशन नई दिल्ली ।
* एम पी शर्मा लोक प्रशासन : सिद्धांत एवं व्यवहार ।
* अवस्थी एवं महेश्वरी,, लोक प्रशासन के सिद्धांत (हिन्दी एंव अंग्रेजी)
* सी पी भाम्भरी, लोक प्रशासन के सिद्धांत ।
* बी एम शर्मा, पब्लिक, एडमिनिस्ट्रेशन (हिन्दी संस्करण)
* बी एल फाडिया लोक प्रशासन, साहित्य भवन, आगरा ।
* डॉ. निशा वशिष्ठ भारत में नौकरशाही की कार्य प्रणाली ।
* टी एन चतुर्वेदी : तुलनात्मक लोकप्रशासन, जवाहर पब्लिकेशन, दिल्ली
* पी पी शर्मा : भारत में लोक प्रशासन:
* M. Buimer (ed): Sociological Research Methods: An Introduction London, Macmillan, 1984.
* De D.A. Vaus, Surveys in Social Research . 2nd edn. London, Unwin Hyman, 1991.
* J. Galtung. Theory and Methods of Socil Research .New York . Columbia University Press, 1987.
* W.J. Goode and P.K. Hatt, Methods of Social Research .New York Mograw Hill, 1952.
* J.B. Johnson and R.A. josiym, Politicals cience Research methods. Washington DC, C.Q. Press 1986.
* F.N. Derlinger, Behavioural Research. New York. Holt Rinehart and Winston. 1979.
* H.J. Rubin . Applied Social Research . Columbusm North Illinois University Press, 1983.
* D. P. Warwick and M. Buimer (eds). Social Research in Developing Countries Surveys and Consciousness in the Third world. Delhi. Research Press, 1993.
* M.Weber. The Methodology of Social Sciences. Translated Edited by E.A. Shills and H.A. Finch New York . The Free Press. 1949.
* P V Young, Scientific Social Surveys and Research .

* बी एम जैन रिसर्ज मैथ्डोलाजी ।
* रविन्द्रनाथ मुखर्जी, सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी ।
* श्यामलाल वर्मा, राजनीति विज्ञान में अनुसंधान प्रविधि ।
* बी एम जैन शोध प्रविधि एवं क्षेत्रीय तकनीक
* त्रिवेदी आर एम एवं शुक्ला डी पी रिसर्ज मैथ्डोलॉजी, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर
* आर एन शर्मा : सामाजिक सर्वेक्षण और अनुसधान की विधियाँ ।

OPTIONAL GROUP - A
"INDIAN POLITICS"
PAPER - I DEMOCRACY IN INDIA & POLITICS OF CHHATTISGARH

Course Rationale -

Democracy in India - This paper deals with the nature, struture and functioning of the democracy in india from it inception to in its current form. The fact that India has been a surviving democracy despite its relative underdevelopment and poverty and in a region where democracy has had a chequered history is considered by many as one of her unique achievement.The process of democratization, the role of political parties and pressure groups, the initiatives at encouraging grass- roots democracy, an the various influences form social determinants like the caste system , class religion , regionalism, ethnicity, and gender, needs to be explained and critically analyzed.

Politics of state of Chhattisgarh - This paper gives an in - depth inside to the level of state politics in India. In this context it offers to study the patterns of state politics and the socioeconomic determinants in shaping the political system. there is also a need to understand the working of federalism and demands for state autonomy and rise of regionalism. It studies the working of coalition Government. The politics of party alignments,splits and mergers. Besides, a through understanding of state politics in incomplete without studying the impact of President's Rule and the emerging role of Governor in shaping the politics of Chhattisgarh.

COURSE CONTENT -

Chapter 1. Democratic Thinking and Tradition in India- Ancient and Modern.
Chapter 2. Nature of Indian Democracy.
Chapter 3. Structure of Indian Democracy. Election Commission.
Chapter 4. Socio - Economics. Determinants of Indian Democracy - Caste. Language. Religion and Poverty.
Chapter 5. Indian Democracy at the grass roots level.
Chapter 6. Role of Women in the political process.

Chapter 7. Parliamentary Vs. presidential model.
Chapter 8. Reorganisation of Status (1956) formation of M.P. Regional unbalances and demand for state of chhattisgarh. Division of M.P. Formation of chhattishgarh state.
Chapter 9. Geographical, Social, Cultural, Economic determinants and basic of chhattisgarh politics. Trends of emerging politics of Chhattisgarh, Centre, state relations and chhattisgarh. The various Problems after formation of Chhattisgarh. Chapter 10. Govt. & State Politics of Chhattisgarh, Governor appointment, poers and constitutional postion - relation with chief minister, Chief Minister appointment powers and position formation of council of Ministers powers and role. Chapter 11. State legislature formation. and powers the state judiciary the High Court of Chhattisgarh organisation and jurisdiction. The role of bureaucracy in Chhattisgarh.
Chapter 12. The evolution of political party systems in chhattisgarh and political parties in chhattisgarh Congress B.J.P. and Bhugan Samaj Party and Other parties their organisational set up and thur factionalism.
Chapter 13. Elections in Chhattisgarh and voting behaviour of Chhattisgarh.
Chapter 14. The role of pressure groups in functioning of Chhattisgarh Govt.
Chapter 15. Democratic decentralisation in Chhattisgarh. Role of Panchayti Raj and Local self Govt. of Chhattisgarh.

वैकल्पिक समूह – अ "भारतीय राजनीति"

प्रश्न–पत्र 1 भारत में लोकतंत्र एवं छत्तीसगढ़ राज्य की राजनीति

पाठ्यक्रम औचित्य – भारत में लोकतंत्र यह प्रश्न पत्र भारतीय लोकतंत्र की स्थापना से वर्तमान स्वरूप तक उसकी प्रकृति, संरचना एवं कार्य प्रणाली का अध्ययन करता है । यह एक तथ्य है । कि भारत अपेक्षाकृत रूप से कम विकसित एवं निधन होते हुये भी अपने लोकतंत्र को सुरक्षित रखने में सफल हुआ है । यद्यपि यह भी सत्य है । कि यहाँ लोकतंत्र पर बार बार प्रहार होते रहे है फिर भी कई देशों ने भारतीय लोकतंत्र को अद्वितीय उपलब्धि माना है । इस प्रश्न पत्र में लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया राजनैतिक दलों एवं दबाव समूह की भूमिका, लोकतांत्रिक, विकेन्दीयकरण के प्रति उत्साहवर्धक दृष्टि, जातीय व्यवस्था, वर्ग, धर्म,क्षेत्र जातीय लैगिंग प्रश्न जैसे – सामाजिक कारकों की व्याख्या एवं समालोचनात्मक विश्लेषण की

आवश्यकता को ध्यान में रखा गया है ।

छत्तीसगढ की राजनीति – यह प्रश्न पत्र भारत में राज्य राजनीति के गहन अध्ययन को दृष्टि में रखेगा। इस संदर्भ में राज्य राजनीति की प्रवृत्तियों तथा राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित करने वाले सामाजिक आर्थिक कारको का अध्ययन होगा । इसमें साझा, सरकारों, दलीय गठबंधनो की राजनीति, दल विघटन एवं दल विलीनीकरण आदि भी सम्मिलित किये गये है।

इस प्रश्न पत्र में छत्तीसगढ की विधायिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका तथा न्यायपालिका के औपचारिक ढांचे के अध्ययन के साथ साथ इनके व्यावहारिक पक्ष को भी अध्ययन का विषय बनाया जायेगा ।

छत्तीसगढ. में मतदान व्यवहार की प्रवृत्तियों तथा दबाव समूहों की भूमिका का अध्ययन भी इस प्रश्न पत्र का एक महत्वपूर्ण प्रयोजन है । लोक तांत्रिक विकन्द्रीयकरण के प्रयासो जेस – पंचायतीराज और शहरी स्थानीय स्वशासन की संस्थाओं . का छत्तीसगढ के संदर्भ में अध्ययन करना भी इस प्रश्न पत्र का प्रमुख अभिप्रेत है ।

विषय सूची –

अध्याय 1. भारत में लोकतांत्रिक चिन्तन, प्रांचीन एवं आधुनिक काल में ।
अध्याय 2. भारतीय लोकतंत्र की प्रकृति ।
अध्याय 3. भारतीय लोकतंत्र की सरंचना, निर्वाचन आयोग ।
अध्याय 4. भारतीय लोकतंत्र के सामाजिक आर्थिक निर्धारक तत्व – जाति, भाषा धर्म, क्षेत्र और निर्धनता ।
अध्याय 5. तृणमुल स्तर पर भारतीय लोकतंत्र ।
अध्याय 6. राजनीतिक प्रक्रिया में महिलाओं की भूमिका ।
अध्याय 7. संसदीय बनाम अध्यक्षीय प्रणाली ।
अध्याय 8. राज्यो के पुनर्गठन (1956) एवं मध्यप्रदेश का निर्माण, मध्यप्रदेश में क्षेत्रीय, असतुंलन और छत्तीसगढ की मांग : मध्यप्रदेश का विभाजन एवं छत्तीसगढ राज्य का निर्माण ।
अध्याय 9. छत्तीसगढ की राजनीति के निर्धारक तत्व, आधार – भौगोलिक, सामाजिक, सॉस्कृतिक, आर्थिक राजनीतिक आदि । छत्तीसगढ की राजनीतिक की उभरती प्रवृत्तियॉ, छत्तीसगढ निर्माण के बाद विभिन्न समस्याये ।
अध्याय 10. राज्य सरकार एवं राजनीति, राज्यपाल, नियुक्ति ,शक्तियॉ, संवैधानिक स्थिति मुख्यमंत्री से संबंध, मुख्यमंत्री – नियुक्ति, शक्तियॉ एवं स्थिति, मंत्री मडल गठन शक्तियॉ एवं भूमिका ।
अध्याय 11. राज्य विधान सभा –संगठन एवं शक्तियॉ, राज्य न्यायपालिका,

- उच्च न्यायालयका संगठन एवं क्षेत्राधिकार एवं छत्तीसगढ में नौकरशाही और उसकी भूमिका।

अध्याय 12 छत्तीसगढ में दलीय पद्धति को विकास एवं प्रमुख राजनीतिक दल - कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी, बहुजन समाज पांर्टी, संगठनात्मक पक्ष एवं गुटबंदी एवं अन्यदल ।

अध्याय 13 छत्तीसगढ मे निर्वाचन की राजनीतिक और मतदान व्यवहार ।

अध्याय 14 छत्तीसगढ में दबाव समूह और उसकी भूमिका ।

अध्याय 15 छत्तीसगढ में लोकतांत्रिक विकेन्द्रीयकरण, पंचायतीकराज एव शहरी स्थानीय स्वशासन।

Reading -

* G Austin, The Constitution of India : Cornerstone of a Nation. Oxford. Oxford University press 1966.
* G.Austin , Working a democratic Constition. The Indian Experience Delhi Oxford University Press. 2000.
* U Baxi and B. Parekh (ed). Crisis and Change in Contemporary India New Delhi, Sage 1994.
* A.H. hanson and J Douglas, India's Democracy New Delhi Vikas 1972.
* Fraukel F. and M. Rao(eds.) Democracy and State Power in Modern India : Deeling of Social Order. Delhi. O.U. Press. 1989.
* N Jayal(ed) Democracy in India, Delhi, Oxford University Press 2001.
* J.K. Ray. India in search of Good Govt.Calcutta, K.P. Bagchi 2001
* M.N. Srinivas , Social Chequnge in modern India, Bombay Allied Publisher 1966.
* M. Welner. The Indian Paradox. Essays in Indian Politic, New Delhi, Sape (1989)
* A kohli (ed.) The success of India's Democracy Cambridge Cambridge University Press, 2001
* R.Kothari , Politics in India, Delhi, orient Longman, 1970.
* A. Lijphart. The Puzzle of Indian Democracy : A Consociational Interpreation. American Political Secience Review 90:2:1996,
* T. Sathyamurthy (ed) Social Change and Political Discourse in India Vols 3 Oxford University Press 1996.
* D sheth Caste and Class-Social Reality and Political Representations. in V.A. Pai Panandikar and A Nandy (eds.) Contemporary India, Delhi. Tata McGraw Hill 1999.
* W.H. Morris jones Govt & Politics in India, Delhi, Orient Longman, 1975.
* Basu. Commentary on the Constitution of India.
* K.V.Raj. Parliamentary Democracy in India.
* A.B. Lal Indian parliament.

* R. Kothari Politics in India, New Delhi, Orient Longman, 1970.
* Iqbal Narayan Stalt politics in India. Marut. Minakshi, Prakashan, 1967.
* P. Chatterjee (ed). States and politics in India, Delhi. Oxford University, press 1997.
* R. Khan. Rethinking India Federalism ,Shimla, Indian Institute of advanced studies 1997.
* Iqbal narain, State Politics in India.
* Subrato Sarkar. The centro and The States (1960 - 71)
* डॉ. प्रभुलाल मिश्र. छत्तीसगढ का राजनीतिक इतिहास ।
* जे. पी. शर्मा. मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय आंदोलन : छत्तीसगढ. के विशेष संदर्भ मे. दुर्गा पब्लिकेशन, नई दिल्ली 1990
* डॉ. अशोक शुक्ल : छत्तीसगढ की सांस्कृतिक चेतना का विकास ।
* डॉ. उमा शंकर शुक्ल : सी.पी. एवं बरार की राजनीति में डॉ. ई. राघवेन्द्र राव
* डॉ. अरविंद शर्मा : छत्तीसगढ का राजनीतिक इतिहास, अरपा प्रकाशन बिलासपुर
* मदनलाल गप्ता : छत्तीसगढ दिग्दर्शन
* डॉ.रामेन्द्र नाथ मिश्र एवं शांता शुक्ला : छत्तीसगढ का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास
* डॉ. रामेन्द्र मिश्र : ब्रिटिश कालीन छत्तीसगढ
* डॉ. अशोक शुक्ल : छत्तीसगढ का राजनीतिक इतिहास
* छत्तीसगढ संदर्भ : देशबंधु प्रकाशन
* सुभाष कश्यप, दल बदल और राज्यों की राजनीति
* रश्मि श्रीवास्तव, भारत में राज्य - कार्यपालिका, सैद्धांतिक और व्यवहारिक रूप में (मध्यप्रदेश के विशेष संदर्भ में)
* डॉ. महेश महेश्वरी, भारत में राज्यपाल का पद एवं स्थिति ।
* हरिशचन्द्र शर्मा, भारत में राज्यों की राजनीति ।
* डॉ. महेश माहेश्वरी, मध्यप्रदेश राजनीति : विविध आयाम ।
* Dr. Sudha . Murthi Regional Disperities in the Economic Development of Madhya Pradesh.

A - 1420 **OPTIONAL GROUP - A**

PAPER - II "FEDERALISM IN INDIA & LOCAL SELF GOVERNMENT"

Course Rationale -

Federalism in india - This paper offers a study of the indian Federal Structure in context of the constitutional framework .it focuses on the historical antecedents and the temper of the time to locate the unitary

base of the constitution . it also provides an indepth insight to the functioning of the centre state relation with reference to Sarkaria Commission Report and demands for state autonomy. It emphasizes the challenging role played by the president,Prime Minister. Governor and Chief Minister in Maintainig the federal power equations . especially during the times of emergency . Its there fore offers a detailed study of developments in Indian Federalism since 1947.

Local Self Government :India has experimented with local Self Government from the very ancient times. However. the imperialist interlude and the consequent emergence of an over developed state has led to the total centralization of state power and authority .Gandhiji championed the cause of decentralization and the Indian Constitution envisaged the creation of Village Panchayats. Which was actualized by the 73rd and 74th amendments . This paper deals with the grass root level democratic units and their significance to our democracy and governance. their composition and poers and relevance of decentralization in contemporary set up . it also critically studies the relatioship between people's bodies and bureaucracy .

Course Content -

Chapter 1. Background Evolution and Nature of Federalism in India.
Chapter 2. Indian Federalism since 19473.
Chapter 3. Centre State Relations with reference to emergency and financial Powers
Chapter 4. Sarkaria Commission Report, An Analysis.
Chapter 5. Inter State Councils.
Chapter 6. Regional parties and their impact on the Federal Process.
Chapter 7. Recent trends and Prospects of Federalism.
Chapter 8. Local Self Government and the Indian Political Proces Since independence.
Chapter 9. The 73th and 74th amendments.
Chapter 10. Rural Local Self Government Composition and Powers.
Chapter 11. Urban Local Self Government: Composition and powers.
Chapter 12. Finances and Local Government.
Chapter 13. Local Self Government Bureaucracy.
Chapter 14. The Impact to Women's Quota in Panchayats.
Chapter 15. Local Autonomy.

ऐच्छिक समूह – अ

प्रश्न पत्र 2 भारत में संघवाद एवं स्थानीय स्वशासन

पाठ्य औचित्य – भारत में संवाद – यह प्रश्न पत्र सविधान की संरचना के संदर्भ में भारतीय संघात्मक ढॉचे के अध्ययन का प्रयास करता है । यह

ऐतिहासिक अनुभवों के आधार पर सविधान के एकात्मक आधार समझने का प्रयास भी है । यह सहकारिया आयोग के प्रतिवेदन तथा राज्यों के स्वायत्ता के मांग के परिप्रेक्ष्य में केन्द्र राज्य संबंधी के क्रियान्वयन का गहन अध्ययन करता है इसमें संघीय शक्ति समीकरणं को बनाये रखने के लिए राष्ट्रपति प्रधानमंत्री राज्यपाल मुख्यमंत्री द्वारा निभाई गयी चुनौती पूर्ण भूमिका को भी सम्मिलित किया गया है । जो मुख्य रूप से आपात्काल में निभाई गयी थी । इस तरह यह 1947 से अब तक के सम्वाद के विषद अध्ययन के लिए प्रयत्नशील है

स्थानीय स्वशासन – भारत में अतिप्राचीन काल से ही स्थानीय स्वशासन का परिक्षण किया है तथापि साम्राज्यवादियो में इस संस्थाओ को कमजोर किया तथा परिणाम स्वरूप एक केन्द्रीयकृत राज्य एवं प्रधिकार तथा अति विकसित राज्य की स्थापना की गांधी जी ने विकेन्द्रीय करण की जोरदार वकालत की भारतीय संविधान ने ग्रामपंचायत के निर्माण की कल्पना की जिसे 73 वे एवं 74 वे सविधान संशोधन में वास्तविकता प्राप्त हुई ये प्रश्न पत्र स्थानीय स्तर की लोकतांत्रिक ईकाईयो तथा हमारे लोकतंत्र एवं शासन नियंत्रण के महत्व उनकी संरचना एव शक्तियॉ एव समकालिन व्यवस्था में विकेन्द्रीय करण की प्रसांगिकता को समझने का प्रयास है यह नौकरशाही एवं जननिकायो के मध्य संबंधो का समीक्षात्मक अध्ययन भी करता है ।

पाठ्यक्रम

अध्याय 1. भारत में संघवाद : पृष्ठभूमि एवं उद्भव ।
अध्याय 2. भारत में संघवाद का विकास 1947 से अब तक ।
अध्याय 3. केन्द्र राज्य संबंध आपात् काल एवं वित्तीय शक्ति के विशेष संदर्भ में ।
अध्याय 4. सरकारिया आयोग का प्रतिवेदन एक विश्लेषण ।
अध्याय 5. अन्तर्राज्जीय परिषदें ।
अध्याय 6. क्षेत्रीय दल तथा संघीय प्रक्रिया पर उनका प्रभाव ।
अध्याय 7. संघवाद की आधुनिक प्रवृत्तियॉ एवं संभावनाऐं ।
अध्याय 8. स्थानीय स्वशासन और स्वतंन्त्रता के बाद से भारत में राजनीतिक प्रक्रिया।
अध्याय 9. 73वां एवं 74वां संविधान संशोधन ।
अध्याय 10. ग्रामीण स्थानीय स्वाशासन रचना एवं शक्तियॉ ।
अध्याय 11. नगरीय स्थानीय स्वाशासन रचना एवं शक्तिया ।
अध्याय 12. वित्त एवं स्थानीय शासन ।
अध्याय 13. स्थानीय स्वशासन में नौकर शाही ।

अध्याय 14. पंचायतो में महिला आरक्षण का प्रभाव ।

अध्याय 15 स्थानीय स्वयत्ता

Reading-

* S.A. Aiyer and U. Mehra (eds) Essays on Indian Federalism. Bombay Allied Publishers, 1965.
* K.R. Bombwall, The Foundation of Indian Federalism, Bombay, Asia Publishing House. 1967.
* A Chanda Federalism in Indai : A study of Union State Relations London, George Allen and Unwin, 1965.
* R. Khan Rethinking Indian Federalism . Shimla Indian Institute of Advanced Studies 1997.
* P. kumar, Studies in Indian Federlism . New Delhi, Deep and Deep. 1988
* M. kurien and P.N. Verghese, Centre - state Relations, New Delhi Macmillan. 1980.
* N. Mukarji and B. Arora (eds), Federalism in India. Origins and Developments.New Delhi Centre for Policy Research , Vikas 1992.
* L. Saez, Federalism without a Centre: The Impact of Political and Economic Reform on India's Federal System. New Delhi Sage, 2002.
* M.C. Setalvad , Union and State Relations under the Indian Constitution , Calcutta, Eastern Law House, Calcutta.1975.
* M.S. Adiseshiah et al. , Decentralized Planning and Panchayati Raj,NewDelhi, Institute of Social Sciences, 1994.
* A Bajpai, Panchanyati Raj and Rural Development. Delhi, Sahitya Prakashan, 1997.
* T.N. Chaturvedi (eds) Local Government, New Delhi, Indian Institute of Public Administration 1984.
* T.N. Chaturvedi and R.B. Jain, Panchayati Raj, New Delhi Indian Institute of Public Administratin, 1981.
* S.N. Jha and P.C. Mathur, Decentrilization and local Politics, New Delhi Sage. 1999.
* S. Kaushik. Women and Panchayati Raj , New Delhi Har - Anand Publications. 1993.
* S Maheshwari , Local Government in India. Agra. Lskshami Narain Agrawal 1996.
* U.K. Sham Bhat , New Panchayati Raj System . A Study of Politico - Administrative Dynamics, Jaipur Rupa. 1995.
* आर एल खन्ना, पंचायती राज.
* एस के डे पंचायती राज एक अध्ययन.
* मध्यप्रदेश पंचायती राज अधिनियम 1993
* एस आर माहेश्वरी भारत में स्थानीय प्रशासन.

* प्रभुदत्त शर्मा, ग्रामीण स्थानीय प्रशासन.
* भारतीय सविंधान का 73 वां एवं 74 वां संशोधन अधिनियम.
* हरिशचन्द्र शर्मा : भारत में लोक प्रशासन, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर
* हरिशचन्द्र शर्मा : भारत में स्थानीय प्रशासन, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर
* चन्द्रा पटनी एवं भू.ले. भाम्भरी, ग्रामीण प्रशासन, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर

OPTIONAL GROUP - A

PAPER - III POLITICAL PARTIES IN INDIA & ELECTORAL POLITICS IN INDIA.

Course Rationale -

Political Parties in India -This paper studies the functioning and working of the political parties and their impact on democratic institutions. It focuses on the nature of party composition and the character of party organization both at the national and state level.Besides the relationship between parties and pressure groups. The Besides the relationship between parties and pressure groups. The process of recruitment and the influence of various social determinants like caste, Class, gender, religion and region on the functioning of political parties are also to be studied. It acquants the dilemmas facing the party organization namely those pertaining to national versus regional interests.it focuses on the compulsionsof party alignments and re - alignment.

Electoral Politics in India- In democratic India the system of election provides the core of representative set up and a free and fair electoral system makes india a true democracy. Election Commissioner is highest authority to monitor the whole election Procedure which the series that the sole of democracy remain sacrosanct. This paper studies the electoral process the role of the Election Commission and patterns of voting behaviour for the last five decades of our democratic process. In addition the various reform proposal 5 of the electoral process, The issue of criminalization of politics and the system of representation need to be explained and critically evaluated.

COURSE CONTENT -

Ch.1. Origins of Political Parties: From the Establishment of the Indian National Congress in 1885 to the Congress system.

Ch.2. Nature of Party System in the post independent India.

Ch.3. National Political Parties. Their Origin Programme Organization and support base.

Ch.4. Regional Political Parties : Their Origin, Programme, Organization and support base.

Ch.5. Patterns of Interation between national and regional political parties.
Ch.6. Political Parties and the electoral Process.
Ch.7. Critical Evaluation of the role and working of Political Parties.
Ch.8. Begnining of the Electoral Polities under Colonial Rule.
Ch.9. Electoral System in India since 1950
Ch.10. Election Commission in India: Powers and Functions A Critical study.
Ch.11. Determinants of Voting Behaviour.
Ch.12. Anti Defection Law : A Critical Study.
Ch.13. Party System:Alignments, Realignments, manifestos and Support Base: A Critical Study.
* Electoral Politics up to 1967.
* Electoral Politics 1967 - 77.
* Electoral Politics 1977 - 80 - 89
* Electoral Politics 1989 to till date.
Ch.14. Defects and Reforms of Electoral Process Tarkunde. Goswami and Indrajeet Gupta Reports.
Ch.15. Majoritarian Parliamentary System Vs. Representational Parliamentary System.

ऐच्छिक समूह – 'अ'

प्रश्न पत्र – 3 भारतीय राजनीतिक दल एवं भारत में निर्वाचन की राजनीति

पाठ्यक्रम औचित्य

भारत में राजनैतिक दल – यह प्रश्न पत्र राजनैतिक दलों के क्रियाओं एवं कार्यकरण तथा उनका लोकतांत्रिक संस्थाओं पर प्रभाव का अध्ययन करेंगा । यह राष्ट्रीय एवं प्रांतीय स्तर पर दलीय संगठन के चरित्र का अध्ययन करता है इसके अलावा राजनीतिक दलों की कार्य प्रणाली पर दलो का दबाव समूह के अन्त : संबंध, भर्ती की प्रक्रिया तथा जातीय वर्ग, लिंग, धर्म क्षेत्र जैसे विभिन्न सामाजिक कारकों के प्रभाव का अध्ययन है । इसमें दलीय संगठन के समस्त राष्ट्रीय बनाम क्षत्रीय हितों के बीच होने वाले द्वन्द्व तथा दलीय गठबंधन एवं पुनर्गठन की बाध्यताओं का भी अध्ययन है

भारत में निर्वाचकीय राजनीति – लोकतंत्रीय भारत में निर्वाचन प्रणाली के द्वारा प्रतिनिधी व्यवस्था का आदर्श रूप प्रस्तुत किया गया है तथा स्वतंत्र एवं स्वच्छ निर्वाचकीय व्यवस्था ने भारत को एक सच्चा लोकतंत्र बनाया है । भारत का निर्वाचन आयोग देश भर में निर्वाचन की प्रक्रिया को नियत्रण एवं देखरेख करने वाली उच्चतम संस्था है । जो यह आश्वस्त करती है कि भारत में लोकतंत्र की आत्मा अक्षुण्ण है

यह प्रश्न पत्र निर्वाचकीय प्रक्रिया,आयोग की भूमिका मतदान व्यवहार की प्रकारया नमूने आदि की लोकतांत्रिक प्रक्रिया के पिछले पांच दशको के अध्ययन का प्रयास है । इसके साथ ही निर्वाचकीय प्रक्रिया के विभिन्न सुधार प्रस्तावों एवं राजनीति के अपराधीकरण के मुद्दे तथा प्रतिनिधित्व की प्रणाली की व्याख्या एवं समीक्षात्मक मूल्यांकन पर केन्द्रीत है **पाठ्यक्रम** –

अध्याय 1. राजनीतिक दलों की उत्पत्ति : 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से कांग्रेस पद्धति तक ।
अध्याय 2. स्वंतत्रयोतर भारत में दल पद्धति की प्रकृति ।
अध्याय 3. राष्ट्रीय राजनीतिक दल : उनकी उत्पत्ति, कार्यक्रम संगठन तथा जनाधार ।
अध्याय 4. क्षेत्रीय राजनीतिक दल : उनकी उत्पत्ति, कार्यक्रम संगठन तथा जनाधार
अध्याय 5. राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय राजनैतिक दलों के मध्य अन्तः क्रिया के स्वरूप (पैटर्न)
अध्याय 6. राजनैतिक दल एवं निर्वाचकीय प्रक्रिया
अध्याय 7. राजनीतिक दलों की भूमिका एवं कार्य प्रणाली का समीक्षात्मक विश्लेषण
अध्याय 8. औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत निर्वाचकीय राजनीति का प्रारंभ ।
अध्याय 9 1950 से भारत में निर्वाचकीय व्यवस्था ।
अध्याय 10. भारत में निर्वाचन आयोग : शक्तियां एवं कार्य – एक समालोचनात्मक अध्ययन ।
अध्याय 11. मतदान व्यवहार के निर्धारक तत्व ।
अध्याय 12. दल बदल विरोधी कानून – एक समालोचनात्मक अध्ययन ।
अध्याय 13. दल पद्धति: गठबंधन, पुनर्गठन, घोषणा – पत्र एवं जनाधार एक समीक्षात्मक अध्ययन ।
निर्वाचकीय राजनीति : 1967 तक
निर्वाचकीय राजनीति : 1967 – 1977
निर्वाचकीय राजनीति : 1977 – 1989
निर्वाचकीय राजनीति : 1989 से अब तक
अध्याय 14. निर्वाचकीय प्रक्रिया के दोष एवं सुधार : तारकुंडे गोस्वामी एवं इन्द्रजीत गुप्ता प्रतिवेदन ।
अध्याय 15. बहुमतीय संसदीय पद्धति बनाम प्रतिनिध्यात्मक संसदीय पद्धति

Reading -

* B. Arora Political parties and party System: The Emergence of New Coalitions, Memo Dec. 1979.

* C. Baxter The Jana singh : A biography of an Indian Party. Philadephia, University of pennyslavania Press. 1969
* P. Brass. Caste Faction and Party is Indian Politics, Vols 2. Delhi Chanakya Publication, 1984 - 1985
* C Fuller and C jafferlot (eds) . The BJP and the compulsions of Politics in India, Delhi, Oxford University press 1993
* S Ghosh Indian National Congress : Its History and Heritage, New Delhi AICC, 1975
* **H.Hartman, Political Parties in India, meerut, Menakshi, Prakashan, 1980**
* Z. Hasan (ed) Parties and party politics in India. New Delhi. Oxford University Press, 2001
* B SenGupta Communism in Indian Politics, New York, Columbia University Press 1972
* B - Sengupta , CPI - M : promises, prospects and Problems .new Delhi. Young Asia, 1979
* J.C. Agrawal and N.K. Choudhary , Elections in India: 1998, New Delhi,Shipra Publication 1998
* R. Ali Representative Democracy and Concept of Free and Fair Elections, New Delhi, Deep and Deep, 1996
* D.A. Anand Electoral Reforms: Curbing Role of Money Power, New Delhi, Indian Institude of Public Administration 1995
* L Bajpayee, Indian Electrol System: An Aanlytical Study, New Delhi, Nardeen Book Centre 1992.
* **A.K. Bhagat Elections and Electoral Reforms in India, Delhi, Vikas 1996.**
* D Butler, A Lahairi and P Roy (eds) India Decides: Electrons 1952 - 1995, New Delhi Living Media Limited 1997
* P. Chafavarty, Democratic Government and Electoral Process, New Delhi , kanishka 1997
* J.K. Chopra, Politics of Electoral Reforms in India, Delhi Mittal Publications, 1989
* A. Lijphart, Electoral Systems and Party Systems, New haven CT. Yale University Press, 1994
* S. Mhalingam matters of Conduct : Election Commission Directives Loom Large, Frontline may 3 1996
* S.L. Shankdhar, The law and Practice of Elections in India, New Delhi. National 1992
* P.N. Sharma, Election and National Politics , New Delhi , Shipra Publications , 1994
* लक्ष्मीमल सिंघवी : विदेशों में निर्वाचन विधि एवं व्यवहार, विजय प्रकाशन मंदिर वाराणसी ।

OPTIONAL GROUP "A"

PAPER - IV POLITICAL SOCIOLOGY & INDIAN POLITICAL ECONOMY

Course Rationale -

Political Sociology - This paper deals with Political Sociology and explains the various approaches to study of the subject. it proposes to intoduce concepts like political culture nature of power and authority, the role of the elite modernization , the debate on equality and inequality, and the process of social changes with reference to India. Since Lohia Said Caste is class in India, There is a need to understand the importance of caste formation and its emergence as a important factor in Indian Politics. The purpose is to critically explain and analyze the social, economic and cultural determinants to the political process in India.

Indian Political Economy : Schumpeter makes a distinction between economics and political economy the former being value free while the later deals with idcological preferences, debates and alternative proposals. The Indian democratic set up has lead to a lively debate on economic issues relating to the nature of planning of Indian during the liberation struggle and the eventual establishment of a planning commission by Subhash Chandra Bose during his president of the Congress Party and the subsequant Bombay Plain and People's Plan. The debate continuous even after independence and even today in this age of liberalization and globalization which is the thrust of this paper.

COURSE CONTENT

1. Main Approaches to the Study of Political Sociology System Approach, Structural Functional Approach and Marxist Approach
2. Historical Sociology Weber
3. Social Stratification : Theory and Practice with Reference to Caste and Class in India
4. Influence and Power Masses and Elite.
5. Legitimacy, Political Socializing and Recruitment
6. Political Culture - Meaning and Types
7. Equality and inequality Debate
8. Approaches to the Study of Political Economy.
9. Political Orders and Economic Change
10. The Planning Process in India
11. Nature and Role of Capital in India : Industrialization and Rural transformation
12. Political Elements of Economy in inquality and Self - Sufficiency
13. Politization of Foreign Aid and Credit
14. Factors leading to Liberalization of Indian Economy.
15. Major issues of Contemporary Political Economy.

ऐच्छिक समूह – अ

प्रश्न पत्र – 4 राजनीतिक समाजशास्त्र एवं भारतीय राजनीतिक अर्थव्यवस्था

पाठ्यक्रम औचित्य –

राजनीतिक समाजशास्त्र – यह प्रश्न पत्र राजनीतिक समाजशास्त्र से संबंधित है तथा विषय के अध्ययन के विभिन्न दृष्टिकोणो को स्पष्ट करता है यह राजनीतिक संस्कृति शक्ति एवं प्राधिकार की प्रकृति, सम्भान्तजनों की भूमिका,
आधुनिकीकरण, समानता और असमानता का विवाद तथा भारत के संबंध में समाजिक परिवर्तनों के
अध्ययन को प्रस्तावित करता है । लोहिया ने कहा था "भारत में जाति ही वर्ग है" इसलिए भारतीय राजनीति में जाति निर्वाण के महत्व तथा इसके एक प्रमुख कारक के रूप में उदय को समझना आवश्यक है । इस प्रश्न पत्र का उद्देश्य भारत में राजनीतिक प्रक्रिया के सामाजिक आर्थिक एवं सास्कृतिक निर्धारकों का समीक्षात्मक विश्लेषण करना है ।

भारतीय राजनीतिक अर्थव्यवस्था – शुम्पीटर ने अर्थव्यवस्था एवं राजनीतिक अर्थव्यवस्था में भेद किया है – पहला मूल्य युक्त है जबकि दूसरा वैचारिक प्राथमिकताओं विवादो एवं वैकल्पिक प्रस्तावो पर विचार करता है । नियोजन जैसे आर्थिक प्रश्न पर स्वाधीनता संग्राम के दौर में ही विचार करना प्रारंभ कर दिया गया था । सुभाषचन्द्र बोस द्वारा कांग्रेस के अध्यक्षीय कार्यकाल में योजना आयोग की स्थापना तथा बाद में बाम्बे योजना तथा जन योजना इसी के प्रमाण्य है । यह विवाद स्वंतंत्रता के बाद से आज तक जारी उदारीकरण एवं वैश्वीकरण की दौड में अभी भी चल रहा है । यही इस प्रश्न पत्र का मुख्य विचार बिंदु है –

पाठ्यक्रम –

अध्याय 1. राजनीतिक समाजशास्त्र के अध्ययन के मुख्य दृष्टिकोण व्यवस्था उपागम – संरचनात्मक प्रकार्यात्मक । उपागम एवं मार्क्सवादी उपागम ।

अध्याय 2. ऐतिहासिक समाजशास्त्र मैक्स वेबर ।

अध्याय 3. सोमाजिक स्तरीकरण सिद्धांत एवं व्यवहार भारत में जाति एवं वर्ग के विशेष संदर्भ में ।

अध्याय 4. प्रभाव एवं शक्ति – जनता एवं संभ्रांत वर्ग ।

अध्याय 5. वैधता, राजनीतिक समाजीकरण और भर्ती ।

अध्याय 6. राजनीतिक संस्कृति, अर्थ एवं प्रकार ।

अध्याय 7. समानता एवं असमानता का विवाद ।

अध्याय 8. राजनीतिक अर्थव्यवस्था के अध्ययन के दृष्टिकोण ।

अध्याय 9. राजनीतिक व्यवस्था एवं आर्थिक परिवर्तन ।

अध्याय 10. भारत में नियोजन – प्रक्रिया ।

अध्याय 11. भारत में पूंजी की प्रकृति एवं भूमिका । औद्योगिकीकरण एवं ग्रामीण रूपांतरण ।

अध्याय 12. असमानता एवं आत्मनिर्भरता के संदर्भ में अर्थव्यवस्था के राजनैतिक तत्व

अध्याय 13. वैदेशिक सहायता एवं ऋण का राजनीतिकरण ।

अध्याय 14. भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण की दिशा में उत्तदायीकरण

अध्याय 15. समकालीन राजनीतिक अर्थव्यवस्था के मुख्य मुद ।

GROUP - A PAPER IV

Reading -

* G.A. Almond and S. Verba, The Civic Culture, Princeton NJ, Princeton University Press, 1963.
* S. Bayly, Caste, Society and Politics in India from the Eighteenth Century of the Modern age, Combridge, Cambridge University Press, 1999.
* B.B. Goswami (ed), Ethinicity, Politics and Political Systems in Tribal Indian, Calcutta : Anthropology, Survey of India 1997.
* M. Janowitz, Political Conflict : Essays in Political Sociology, New York, New Viewpoints, Watts, 1970.
* R. Kothari, Politics in India, New Delhi, Orient Longman, 1970.
* R. Kothari, Democratic Polity and Social Change in India, Allied, 1976.
* T.K. Oomen, Protest and Change : Studies n Social Movements, New Delhi, Sage 1990.
* M.N. Srinivas, Social Change in Modern India, Bomaby, Allied Publishers, 1966.
* David Eagtan, The Theoretical Relevance of Political Socialisation.
* Levin Martin, L., Social Climates and Political Socialisation.
* Rokken Stain, The Comparative Study of Political Participation, University of Ilinice Press, 1962.
* Marthik Devine, Political Recruitment and Careers in the International Encyclopaedia of Social Science, New York, 1968.
* बी.एल. फाड़िया राजनीतिक समाजशास्त्र
* धर्मवीर, राजनीतिक समाजशास्त्र
* एम.एम.लोवानिया: राजनीतिक समाजशास्त्र कॉलेज बुक डिपो, जयपुर
* A. Abdul, Poverty Alleviation in India- Polities and Programmes, New Delhi, Ashish, 1994.
* J. Adams, "Breaking Away : India's economy vaults into the 1990s"

In M. Bouton and P. Oldenburg (eds), India Drifing 1990 Besides Colorado, Westview Press and the Asia Society, 1990.

- I.J. Ahiuwalia and I.M.D. Little, India's Economics Reforms and Development, Delhi, Oxford University Press, 1998.
- P. Bardhan, The Political Economy of Development in India, Oxford Blackwell, 1984.
- T. Byress(ed), the Indian Economy : Mojor Debates Since Independence, Delhi Oxford University Press, 1998.
- T. Byres (ed), The State Development Planning and Liberalization in India, Delhi Oxford Press, 1997.
- R. Cassen and V. Joshi (eds), India : The Future of Economic Reform, Delhi, Oxford Press, 1995.
- P. Chaudhur : The Indian Economy : Poverty and Development, New Delhi, Vikas 1979.
- R. Jenkins, Democrtic Politics and Economic Reform in India, Cambrdige, Cambridge University Press, 1999.
- नीलिमा देशमुख : आर्थिक नीति और प्रशासन, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर
- हरिशचन्द्र शर्मा राजनीतिक समाजशास्त्र, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर
- वात्सायन : केदारनाथ, राजनाथ मेरठ

AL-6513 OPTIONAL GROUP - C A-1423

PAPER - 1 INDIAN FOREIGN POLICY & THEORY AND PRACTICE OF DEPLOMACY

4442 8462

Course Rationale - AK-3513 AM-1480

India's Foreign Policy : India's foreign Policy reflects the philosophy of India as a sovereign democratic nation and the self-image and role she conceives for herself in the global policies. The focus of this paper is the theoretical perspecticve of the role of compulsion, constraints and conditions, which actually has framed the country foreign policy for the past five decades and on this basis considers the projection for the future. It also specifically focuses on the challenges of the contemporary times such as globazliztion, liberalization, cross border terrorism, human rights, environmental and gender concems and the like and India's stance pertaining these issues.

Theory and Practice of Deplomacy : This paper offers to study the origins of diplomacy and how it can mediate estrangement successfully if engaged in skillfully. It provides a definitions and conceptual understanding of the term "Deplomacy" and its use as an Instrument to further and enhance national policy. It elaborates on the successful handling of diplomacy in securing and protecting national interest. It examines the changes in styles of diplomacy. The thrust of this paper lies in

the understanding contemporary developments in theory and practice of diplomacy. It emphasizes on the importance of diplomacy in securing bilatcral and multilateral relations and power sharing among nations.

COURSE CONTENT :

Chaper 1:	Foreign Policy : Meaning and Major Approaches to the Study foreign policy
Chaper 2:	Principles and objectives of India's Foreign Policy
Chaper 3:	Domestic Determinants : Geography, History and Culture Society and Political System
Chaper 4.	External Determinates : Global, Regional and Bilaternal
Chaper 5.	Structure of Foreign Policy Decision Making and Continuity and changes in India's Foreign Policy
Chaper 6.	India's Foreign Policy in a comparative Perspective
Chaper 7.	India's Policy Towards her Neighbours
Chaper 8.	India's Approach to major Global Issues : Globalization, Disarmament and Arms Control Cross Border Terrorism, Environmental Position, Human Right.
Chaper 9.	Diplomacy and International Relation Theory.
Chaper 10.	A definition and Conceptual understanding of Deplomacy
Chaper 11.	The Historical Evolution of Diplomatic Practice
Chaper 12.	Diplomacy as an Instrument of National Policy
Chaper 13.	Cold War Diplomacy between the Two super Powers
Chaper 14.	Negotiating Strategies of Defferent countries
Chaper 15.	Open Diplomacy
Chaper 16.	Issues in Contemporary Diplomacy

ऐच्छिक समूह – स

प्रश्न पत्र–1 भारतीय विदेश नीति एवं राजस्व के सिद्धांत और व्यवहार

पाठ्यक्रम औचित्य

भारतीय विदेश नीति भारतीय विदेश नीति एक संप्रभु लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में भारत का दर्शन, उसकी स्व-छवि और वैश्विक नीतियों में उसके द्वारा स्वयं के लिए अपनाई गई भूमिका को प्रतिबिंबित करती हैं। इस प्रश्न पत्र का केन्द्र उन दबाव, विवशता और परिस्थितियों की भूमिका का सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य है, जिसने पिछले पांच दशकों में देश की विदेश नीति को वस्तुतः निर्मित किया है और इसी आधार पर भविष्य की आकृति का निरूपण करता है। यह समकालीन चुनौतियों यथा वैश्वीकरण, उदारीकरण, सीमापार आतंकवाद, मानव अधिकार, पर्यावरणीय एवं लैंगिक संबंधी इत्यादि और इन मुद्दों के संबंध में भारत के परिस्थिति जन्म कदम कर भी विशेष

(11)

रूप से या ध्यान केन्द्रित करता है।

राजनम के सिद्धांत और व्यवहार– इस प्रश्न पत्र राजमन के उदभव के अध्ययन से संबंधित है। यदि राजनम पूर्ण कौशल के साथ प्रयुक्त हो तो यह किस प्रकार सफलंतापूर्वक पृथकता के भावों के मध्य सामंजस्य कर सकता है– इस प्रश्न पत्र का अध्ययन विषय है। परिभाषात्मक एवं अवध ारणात्मक दृष्टि से राजनम को समझने का प्रायस एवं राष्ट्रीय नीति की प्रगति एवं उन्नति के उपकरण के रूप में राजनम का उपयोग इसमें प्रावछित है। यह राष्ट्रीय हित के संवर्धन एवं संरक्षण में राजनम के सफल संचालन की विस्तारपूर्वक व्याख्या करता है। यह राजनम की शैली में परिवर्तन का परीक्षण करता है। राजनम के सिद्धांत और व्यवहार में समकालीन विकास को जानना इस प्रश्न पत्र का मूल आशय है। यह राष्ट्रों के मध्य शक्ति की हिस्सेदारी और द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय संबंधों की प्राप्ति में राजनम के महत्व पर जोर देता है।

पाठ्यकम विषय वस्तु –

अध्याय 1 विदेशनीति– अर्थ एवं विदेशनीति के अध्ययन के प्रमुख उपागम/दृष्टिकोण।

अध्याय 2 भारतीय विदेश नीति के सिद्धांत और उददेश्य।

अध्याय 3 घरेलू निर्धारक तत्व– भूगोल, इतिहास एवं संस्कृति, समाज एवं राजनीति व्यवस्था।

अध्याय 4 बाह्य निर्धारक तत्व– वैश्विक एवं द्विपक्षीय क्षेत्रीय।

अध्याय 5 विदेशनीति का ढांचा, निर्णय– निर्माण तथा भारतीय विदेश नीति में निरंतरता एवं परिवर्तन।

अध्याय 6 तुलनात्मक परिपेक्ष्य में भारतीय विदेशनीति।

अध्याय 7 पड़ोसी देशों के प्रति भारत की नीति।

अध्याय 8 प्रमुख वैश्विक मुददों के प्रति भारत का दृष्टिकोण : वैश्वीकरण, निःशस्त्रीकरण एवं शस्त्र नियंत्रण, सीमावार आतंकवाद, पर्यावरणीय स्थिति, मानवाधिकार।

अध्याय 9 राजनय एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंध सिद्धांत।

अध्याय 10 राजनय का परिभाषात्मक एवं अवधारणात्मक अध्ययन।

अध्याय 11 राजनयिक व्यवहार का ऐतिहासिक विकास।

अध्याय 12 राष्ट्रीयनीति के यंत्र के रूप में राजनय।

अध्याय 13 दो महाशक्तियों के मध्य शीतयुद्ध राजनय।

अध्याय 14 विभिन्न देशों की संवाद– रणनीतियां (नेगोसिएशन स्ट्रेटैजी)

अध्याय 15 खुला राजनय।

अध्याय 16 समकालीन राजनम के मुददे।

READINGS -

- A Appadoral, Domestic Roots of India's Foreign Policy, New Delhi, Oxford University Press, 1981.
- A Appadoral, National Interest and Non-Alignment, New Delhi, Kallnga Publications 1999.
- R.B. Babu, Globalization and South Asian States, New Delhi, South Asian Publishers, 1998.
- J. Bandhopadhyaya, The Making of India's Foreign Policy, Calcutta, Allied 1979.
- R. Bradrock, India's Policy Since 1971, London, Royal Institute for International Affairs, 1990.
- S.P. Cohen and R.L. Park, India : Emergent Power ? New York, Crane Russak and Co. 1978.
- A.K. Damodaran and U.S. Bajpai (eds), India's foreign Policy : The Indian Ocean-Indian and American Pespectives, New York, Oxford University Press 1989.
- I.Das, India in World Politices, New York, Basic Books, 1932.
- V.P. Dutt, India's Foeign Policy in a Chaging World New Delhi Vikas 1999
- N. Jetley, India's Foreign Policy : Challenges and Prospects, New Delhi Janaku Prakashan 1985.
- H. Kapur, India's Foreign Policy : Shadow and Substance, New Delhi, Vikas 1976
- D.T. Lakadwala, International Aspects of India's Economic Development London, Oxford University Press, 1951.
- S. Mansingh, India's Search for Power, New Delhi sage 1985.
- K.M. Pannikar, Asia and Western Dominance, London, Allen and Unwin, 1953.
- B. Prasad, Orgins of India's Foreign Policy, Delhi, vikas, 1979.
- M.S. Rajan, Non-Alignment and the Non-Aligrment Movement in the Present World Order, Delhi Kinark, 1994.
- A.P. Rana, Inperatives on Non-Alignment : A Conceptual Study of India's Foreign Policy in the Nehru Period, New Delhi, 1976.
- T.K. Venkataraman, India and her Neighbours, New Delhi, Vora.
- American Academy of Political and Social Science, Instructing in Diplomacy The Liberal Arts Approach, 1972.
- G.A. Craing and F. Gilbert (eds), Force and Statecraft, New York, Oxford University Press, 1963.
- R. fisher and W. Ury, Getting to Yes : Negotiating Agreement without giving in Boston, Houghton Miffin Co. 1981.
- C.J. Friedrich, Deplomacy and the Study of International Relations, Oxford, The Clarendon Press, 1919.

- J. Gultung, Peace Research : Science or Politics in Disguise, Oslo Prio Publication 23-6-1967.
- D.L.S. Hamlin, Diplomacy in Evolution, Toronto, University of To ronto Press, 1961.
- H. Kissinger, Diplomacy, New York, Simon and Schuster, 1994.
- H.G. Nicolson, Diplomacy, London, Oxford University Press, 1963.
- J.S. Nye, Peace in Parts : Intergration and Conflict to Regional Organization, Bostron, Little Brown, 1971.
- L.B. Pearson, Diplomacy in a Nuclear Age, Cambridge Massachusetts, Harvard University Press, 1959.
- S. Reinsch, Secret Diplomacy, New York, Harcourt Brace, 1922.
- के.एम.पनिक्कर, राजनय
- श्रीमती कृष्णा राय, राजनय के सिद्धांत एवं व्यवहार
- पुष्पेश पंत, भारतीय राजनय
- हरिशचन्द्र शर्मा : राजनय के सिद्धांत, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर
- बी.के. उपाध्याय : भारतीय राजनय एवं विदेश नीति, विश्व भारती प्रकाशन, आगरा
- काशी प्रसाद मिश्रा : भारत की विदेश नीति, मैकियावेली, दिल्ली 1977
- भाटिया एवं गुप्त : राजनय तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठन, यूनिर्वसल, क्वालियर
- वेद प्रकाश वैदिक : भारतीय विदेश नीति, नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली 1980
- वी.डी. सुधीर : भारत की विदेश नीति के बदलते संदर्भ, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली 1980
- शील के. अशोपा:भारतीय विदेश नीति का मूल्यांकन, प्रिंटवेल, जयपुर
- पी.डी. पाण्डेय : तृतीय विश्व एवं भारत का विकास की समस्याएं, कैलाश पुस्तक मंदिर भंडार, भोपाल
- गिरजेश पंत : विश्व तेल एवं भारत, कमल प्रकाश, इंदौर
- एस.एम. राय : भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद, दिल्ली विश्वविद्यालय, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली
- गांधी जी राय : राजनय के सिद्धांत एवं व्यवहार, भारतीय भवन, पटना।

OPTIONAL GROUP - C

PAPER - II FOREIGN POLICY OF MAJOR POWERS & THE THIRD WORLD IN THE INTERNATIONAL SYSTEM : SECURITY AND DEVELOPMENT DEMENSIONS

COURSE RATIONALE :

Foreign Policy of Major Power - This Paper Provides a theoretical framework to the policies that major powers follow in world affairs. The paper provides the background to the problems of global governance and factors affecting them. The paper takes a detailed view of foreign policy pursued by the Permanent-Five (P-5) countries as well as other nation like German and Japan. which due to their unique placement in world for influencing the global political security and strategic affairs. His paper provides a complete overview of the foreign policies and helps in understanding and predicting the stance of the major powers of the world contemporary politics and Future.

The Third World in the International System : Security and Development - This paper offers to study the development strategies and the security dilemmas facing the countries of the third world caught amidst the Modernization syndrome. The emergence of the post-colonial new nations as part of the international community is one of the major development of contemporary times. This paper analyses the historic antecedents the different developmental models and examines their success and failures in the context of the actual performance of last five decades. The complexity of North-South dependency and the challenges that have emerged as a result of the forces of globalization and liberalization needs to be explained and analyzed.

COURSE CONTENT :

Chaper 1. foreign Policy : Meaning and Determinants

Chaper 2. Major Approaches to the stury of Foreign Policy

Chaper 3. US foreign Policy

Chaper 4. Foreign Policy of Britain and France

Chaper 5. Foreign Policy of USSR(Russia)

Chaper 6. Foreign Policy of China

Chaper 7. Foreign Policy of Germany and Japan

Chaper 8. The Third World : A Conceptual Delineation

Chaper 9. Thirds World Security Delimmas and Disarmament Prospects

Chaper 10. Third World, The Development Strategies and their Evaluative Analysis

Chaper 11. "Complex Dependency" of North-South relationship From

New International Economic Order (NIEO) to WTO
Chaper 12. Problems of the Thirds world Solidarity Group of 77
Chaper 13. Non-Alignment in the post Cold War Era
Chaper 14. Theird World : Changes and Challenges in the context of Globalization

ऐच्छिक समूह – स

प्रश्न पत्र–2 प्रमुख शक्तियों की विदेश नीति एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में तृतीय विश्व : सुरक्षा और विकास के आयाम

पाठ्यक्रम औचित्य

प्रमुख शक्तियों की विदेश नीति यह प्रश्न पत्र विश्व कियाकलाप में प्रमुख शक्तियों द्वारा अपनाई जाने वाली नीतियों का सैद्धांतिक ढांचा प्रावधित करता है। यह प्रश्न पत्र वैश्विक शासन एवं नियंत्रण की समस्याओं एवं उनके प्रभावक कारकों की पृष्ठभूमि प्रावधित करता है। इसमें स्थाई पांच (पी 5) देशों के साथ ही अन्य देश जैसे जर्मनी और जापान जिन्हें कि वैश्विक, राजनीतिक, सुरक्षा एवं राजनीतिक मामलों को प्रभावित करने के लिए संसार में अपूर्व स्थान प्राप्त है, के द्वारा अपनायी जाने वाली विदेश नीति का विस्तृत अध्ययन सम्मिलित है। यह प्रश्न पत्र विदेश नीतियों का सम्पूर्ण परिदृश्य प्रस्तुत करता है और समकालीन राजनीति एवं भविष्य में विश्व की प्रमुख शक्तियों के परिस्थितिजन्य कदम जैसे और क्या होंगे उन्हें समझने और इनका अनुमान लगाने में सहायता करता है।

अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में तृतीय विश्व एवं सुरक्षा और विकास के आयाम आधुनिकीकरण के लक्षणों के समावेश (सिन्ड्रोम) के मध्य जकड़े तीसरी दुनिया के देशों को जिन विकास रणनीतियों एवं सुरक्षा द्वन्द्वों का सामना करना पड़ता है। यह प्रश्न पत्र पर उनका अध्ययन करता है अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के सदस्य के रूप में उत्तर औपनिवेशिक नवीन राष्ट्रों का अभ्युदय समकालीन युग का प्रमुख विकास है। यह प्रश्न पत्र ऐतिहासिक वृत्तांत एवं विभिन्न विकासात्मक प्रादर्शों का विश्लेषण करता है और विगत पांच दशकों के वास्तविक अनुपालन के संदर्भ में उनकी सफलताओं एवं विफलताओं का परीक्षण करता है। उत्तर दक्षिण निर्भरता की जटिलता तथा चुनौतियां जो वैश्वीकरण एवं उदारीकरण की शक्तियों के परिणामस्वरूप उदित हुई है को भी स्पष्ट एवं विश्लेषित किये जाने की आवश्यकता है।

पाठ्यक्रम विषय वस्तु

अध्याय 1. विदेश नीति अर्थ एवं निर्धारक तत्व

अध्याय 2. विदेश नीति के अध्ययन के प्रमुख उपागम (दृष्टिकोण)
अध्याय 3. संयुक्त राज्य की विदेश नीति
अध्याय 4. ब्रिटेन एवं फ्रॉंस की विदेश नीति
अध्याय 5. रूस की विदेश नीति
अध्याय 6. चीन की विदेश नीति
अध्याय 7. जर्मनी और जापान की विदेश नीति
अध्याय 8. तृतीय विश्व : एक अवधारणात्मक चित्रण
अध्याय 9. तृतीय विश्व : सुरक्षा द्वन्द एवं निःशस्त्रीकरण संभाव्यता
अध्याय 10. तृतीय विश्व : विकास रणनीतियां एवं उनका मूल्यांकन विश्लेषण
अध्याय 11. उत्तर दक्षिण संबंधों की जटिल निर्भरता–नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था से विश्व व्यापार संगठन तक।
अध्याय 12. तृतीय विश्व एकता की समस्याएं 77 का समूह (ग्रुप ऑफ 77)
अध्याय 13. उत्तर शीतयुद्ध काल में असंलग्नता (गुट निरपेक्षता)
अध्याय 14. तृतीय विश्व : वैश्वीकरण के संदर्भ में परिवर्तन एवं चुनौतियां।

READINGS -

- R.J. Art and S. Brown (cds). US Foreign Policy : The search for a new Role, New York, Macmillan, 1993.
- D. Campbelln, United States Foreign Policy and the Politics of Identily, Minneapolis, University of Minesota Press, 1992.
- G. Chan, Chinese Perspective on International Relation, Newzealand, Macmillan University Press, 1999
- P.M. Cronin, From Globalism to Regionalism : New Perspective on US Foreign and Defence Policies, Washington, National Defence University Press, 1993.
- J.B. Dunlop, The Rise of Russia and the Fall of the Soviet Empire, Princeton NJ, Princeton University Press, 1993.
- J. Dower, Japan in Peace and War, York, New Press, 1994.
- J. Frankel, The Making of Foreign Policy, London, Oxford University Press 1963.
- Gutjahrm German Foreign And Defence Policy after Unification, New York, Pinter 1994.
- C. Hill, Changing Politics of Foreign Policy, Hampshire Macmillan, 2001.
- G.E. Kennan, American Diplomacy : 1900-1950. Chicago, university of Chcago Press, 1951.
- S. Masahide (ed), Japan and the Asian Pacific Region, London, Croom Hel, 1984.
- H.J. Morgenthau, In Defense of the National Interest, New York, Knopf, 1951.
- R.G. Sutter, Shaping China's Future in World Affairs : The Role of the US, Boulder, Colorado, Westview Press, 1996.

* P. Zwick, Soviet Foreign Relation : Process and Policy, Englewood Cliffs NJ, Prentice Hall. 1990
* R. Burbach, Or Numez and B. Kagatlisky, Globalizztion and its Discontents : The Rise of Postmodern Socialisms, London, Pluto. 1997
* P. Cammack D. Pool and W. Tordoff, Third World Politics : A Comprative Introduction, 2nd edn Londo, Macmillan, 1993.
* J.A. Ferguson, "The Third World" In R.K. Vincent (ed) Foreign Policy and Human Rights, Cambridege, Cambridge University Press, 1996.
* A.M. Hoogvelt, Globalization and the Post-colonial World : The New Political Economy of Development, Basingstoke, Macmillan, 1997.
* M. Kamrava, Politics and Society in the Thirds World, London, Routledge, 1993.
* S.D. Krasner, Structual Conflict : The Third World against Global Liberalism, Barkeley, University of California, 1985.
* J. Midgal Strong Societies and Weak States, State-Society relations and State Capabilities in the Third World, Princeton, NJ, Princeton University Press, 1998
* A.L.M. Miller, The Third World in Global Environmental Politics, Boulder Colorado, Lynne Rienner, 1995
* J. Ohmac, The Bordeless World, New York, Harper Business, 1990.
* M.S. Rajan, Non-Alignment and the Non-Alignment Movement in the Present World Order, Delhi, Konark, 1994.
* **B. Smith, Understanding Third World Politics, London Macmillan, 1996.**
* R. Slater, Boulder Colorado, Lynne Rienner, 1993.
* M. Waters, Globalization, 2nd edn, London, Routledge, 2000.
* P. Alston, The United Nations and Human Rights : A Critical Appraisal, Oxford, The Clarendon Press, 1995.
* A.A. An-Naim (ed) Human Rights in Cross-Cultural Perspective, Philadelphia University of Pennsyivania Press, 1991
* D. Beetham (ed), Politics and Human Rights, Oxford Blackwell, 1995.
* T.V. Boven "The United Nations and Human Rights : A Critical Appraisal", bulletin of Peace Proposals, No. 3, 1977.
* I. Brownlin (ed), 'Basic Documents on Human Rights Oxford, The Clarendon Press. 1992
* M.M.J. Chan, "The Rights to a Nationality as a Human Rights", HRLJ, Volume 12, 1991.
* I. Claude, National Minorities - an International Problem, Cambridge Massachusetts, Harvad University Press, 1955,
* S. Davidson, Human Rights, "Buckingham and Philadelphial, Open University Press, 1992.
* *मथुरा लाल शर्मा–बदलती विदेश नीतियां, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर*
* *दीनानाथ वर्मा–अंतर्राष्ट्रीय सम्बंध, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल1988, आगरा*

* *पी.डी. पाण्डेय – तृतीय विदेश नीति एवं भारत की विकास की समस्याएं कैलाश पुस्तक मंदिर, भोपाल*
* *मथुरा लाल शर्मा – प्रमुख देशों की विदेश नीतियां, विजय प्रकाशन मंदिर, वाराणसी।*

OPTIONAL GROUP - C

PAPER-III : INTERNATIONAL LAW & HUMAN RIGHTS : PROBLEMS AND PROSPECTS

COURST RETIONALE :

International Law - International Law is usually defined as rules that govern the conduct of states in their relations with one another. It traces its origin and development to the contribution of Hugo Grotius. This paper studies the nature, content and the different aspects of International law pertaining go to legal principles of recognition, Jurisdiction law of sea, diplomatic immunities and privileges, treaty of obligation and crimes against humanity. The distinction between international law and what is terned as domestic jurisdiction of nation states needs to be explained and analyzed in order to understand the dynamics of international system and the relationship between nations.

Human Rights : Problems and Prospects - Human Rights have acquired a new significance since the end of Secone World War in Shaping the relation between countries. The United Nations Declaration of Human Rights has given these rights a new meaning and significance Since then there has been concerted effort to protect and guarantee these rights in light of different social, economic and cultural backgrounds of the individual countries it highlights the recent East Asian perspective to the understanding of Human Rights and the link often established between trade and human rights.

COURSE CONTENT :

1. The Origins and Development of International Law.
2. Grotius Contributions
3. the Nature and Contents of International Law with Reference to Changing Nature and different Perspectives.
4. Condification and Progressive Development international Law.
5. International Legal Priciples : Recognition, Equality, Jurisdiction, Law of Sea, Treaty Obligation, Diplomatic Immunities and Privileges.
6. International Law and Economics Development Third World Concerns.
7. Crimes against Humanity and provision of International Law.
8. The Limitations and Possibilities of International Law.
9. Concept of Human Right : Historical Develoment.
10. Human Rights : One or Many.

11. The Internationalization of Human Rights the Evolving inter Governmental Institutional Structure.
12. Human Rights and the united Nations : Charter Provision.
13. Universal Declaration of Human Rights and the Various Other Conventions.
14. International Protection of Human Rights : Civil, Political Social and Economic Rights.
15. Collective Rights : The Right of Self Determination.
16. Problems and Prospects.

ऐच्छिक समूह – स

प्रश्न पत्र–3 अंतर्राष्ट्रीय विधि एवं मानव अधिकार : समस्याएं एवं संभावनाएं

पाठ्यक्रम औचित्य

अंतर्राष्ट्रीय विधि अंतर्राष्ट्रीय विधि सामान्यतः ऐसे नियमों के रूप में परिभाषित की जाती है जो राज्यों के एक दूसरे से आपसी संबंधों के आचरण को विनियमित करते हैं। ह्यूगों ग्रोशियस के चिंतन से उनका मूल एवं विकास ज्ञात होता है। यह प्रश्न पत्र अंतर्राष्ट्रीय विधि की प्रकृति, विषय वस्तु एवं अन्य पहलुओं यथा मान्यता क्षेत्राधिकार, सामुद्रिक विधि, राजनमिक उन्मुक्तियां एवं विशेषाधिकार, दायित्व संधि एवं मानवता के विरूद्ध अपराध । आदि से संबंधित विधिक सिद्धांतों का अध्ययन करता है। अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था की गतिशीलता और राष्ट्रों के मध्य संबंधों को समझने के लिए अंतर्राष्ट्रीय विधि और राष्ट्र राज्यों के घरेलू क्षेत्राधिकार के मध्य अंतर स्पष्ट करने एवं विश्लेषण करने की आवश्यकता है।

मानव अधिकार : समस्याएं एवं संभावनाएं – द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात देशों के मध्य संबंधों को आकार देने में मानव अधिकार ने नवीन महत्व प्राप्त किया है। संयुक्त राष्ट्र की मानव अधिकार घोषणा ने इस अधिकारों को नया अर्थ एवं महत्व प्रदान किया है एवं उसकी समय से इन मानव अधिकारों की संरक्षा एवं प्रत्याभूति के लिए प्रयास किए गए हैं। यह प्रश्न पत्र विश्व समुदाय की उन समस्याओं के बारे में है जो प्रत्येक देश की भिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में इन अधिकारों को प्रभावशील करने में उभरी है। यह नवीन पूर्व एशियाई परिप्रेक्ष्य में मानव अधिकारों को समझने और व्यापार एवं मानव अधिकार के मध्य बहुधा स्थापित संबंधों पर प्रकाश डालता है।

पाठ्यक्रम विषय वस्तु

1. अंतर्राष्ट्रीय विधि का मूल एवं विकास
2. ग्रोशियस का योगदान

3. अंतर्राष्ट्रीय विधि की प्रकृति एवं विषय वस्तु बदलती प्रकृति एवं विभिन्न परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में।
4. संहिताकरण एवं अंतर्राष्ट्रीय विधि का अनुकमिक विकास।
5. अंतर्राष्ट्रीय विधिक सिद्धांत मान्यतां, समानता, क्षेत्राधिकार, सामुद्रिक विधि, दायित्व संधि, राजनयिक उन्मुक्तियां एवं विशेषाधिकार।
6. अंतर्राष्ट्रीय विधि एवं आर्थिक विकास, तृतीय विश्व से संबंध
7. मानवता के विरूद्ध अपराध एवं अंतर्राष्ट्रीय विधि के प्रावधान।
8. अंतर्राष्ट्रीय विधि की सीमाएं एवं संभावनाएं
9. मानव अधिकार की अवधारणा ऐतिहासिक विकास
10. मानव अधिकार एक या अनेक
11. मानव अधिकार का अंतर्राष्ट्रीय अंतशासकीय संस्थागत संरचना का अविर्भाव
12. मानव अधिकार और संयुक्त राष्ट् चार्टर के प्रावधान
13. मानव अधिकार की सार्वभौमिक घोषणा एवं विभिन्न अन्य अभिसमय
14. समानव अधिकारों का अंतर्राष्ट्रीय संरक्षण नागरिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक अधिकार।
15. सामूहिक अधिकार : आत्म निर्णय का अधिकार
16. समस्याएं एवं संभावनाएं

READINGS -

* S.D. Bailcy, Prohibitions and Restraints in War London and New York, Oxford University Press. 1972.
* J.L. Brierly, The Law of Nations, 4th Edn, Oxford. The Clarendon Press, 1949.
* K. Deutsch and S. Hoffman (ed). The Relevance of Internation Law, Oxford. The Clarendon Press, 1955.
* L.Duguit. Law in the Modern State, New York, 3.W. Huebsch. 1919.
* C.G. Fenwick, International Law, Oxford the Clarendon Press. 1939.
* R. Higgins. Development of International Law Through the Political Organization of the United Nations. 1963.
* **H. Kelsen, Principles of International Law, New York, rinehart and Co. 1952.**
* W. Levi. Law and Politics in the International Society. Beverly "Hills California, Sage. 1975.
* L. Oppeheimer, Internation Law Vol.I. 1969 Revised edn, Vol II 1953.
* J. G.Starke, Introduction to International Law, London. Butterworths and Company Ltd. 1947
* टण्डन, इंटरनेशनल लॉ
* व्ही.डी. महाजन, इंटरनेशनल लॉ

- वेदालंकार, अंतर्राष्ट्रीय कानून
- S.N. Mishra : Public International Law. Cultural Law
- **J. Donnelly, The Concept of Human Rights, London, Croom Helm, 1985.**
- T. Evans. The Politics of Human Rights : A Global Perspective. London Pluto Press. 2001
- M. Ignatieff. Human Rights as Politics and Idolatory. Princeton N.J. Princeton University Press. 2001
- F.G. Jacobs and R.C.A. White. The European Convention of Human Rights Oxford. The Clarendon Press. 1996
- T. Meron (ed). Human Rights in International Law. Legal and Policy Issues Oxford. Oxford University Press. 1984
- **R.A. Ralk, "Comparative Protection of Human Rights in Capitalist, Socialist and Third World Countries", Universal Human Rights,1, April- June, 1969.**
- P. Sieghart. The International Law of Human Rights. Oxford. The Clarendon Press. 1983.
- S. Subramanian. Human Rights : International Challenges. Delhi. Manas. 1997.
- **J.J. Waldron (ed) Theories of Rights, Oxford, Oxford University Press, 1984.**

OPTIONAL GROUP - C
PAPER - IV : INTERNATIONAL ORGANIZATION & POLITICS OF INTERNATIONAL FINANCIAL INSTITUTIONS

COURSE RATIONALE :

International Law - This paper studies the evolution and the development of international organizations from its inception till present times it focuses on the problems that conform international organizations and constraints within which they function. An in-depth study of the structure and functioning of the United Nations needs to be undertaken and analyzed from the perspective of whether it has lived up to the expectations hope and aspirations of its architects. In addition the shift from political and security considerations to social, economic and humanitarian concern following the end of the cold war and UN's role in facilitating these needs to be analyzed.

Politics of International Financial Institutions : In the post Second World War Period the reconstruction and development of the worldposed a great problem thus giving rise through the Bretton Woods Agreement to the twin organizations of the World Bank and the International Monitory Fund. This Paper deals with the role, functions, importance and the need rendered by these institutions. It critically assesses the structure and organization of these institutions and their role in economic development. It assesses the success and failure of these institutions in achieving their objectives. In view of globalization how importante are these institutions and their functions needs to be critically analyzed.

COURSE CONTENT :

1. The Nature and Evolution of International Organization
2. International Organization : A Hybird of Nation State System and the International System.
3. The League of Nations.
4. The United Nations : Structure and functions.
5. Pacific Settlements of Disputes and Enforcement Action.
6. Economic and Social Development.
7. United Nations in the post cold War Era.
8. International financial Arrangement Before the Second World War.
9. The Evolution of International Financial Institutions The Post War Bretton Woods System.
10. **The Impact of The Second World War and the post war Reconstruction.**
11. The World Bank : Structure and Developmental Activities.
12. The International Monitory Fund : Structure and Operational Review.
13. Regional Development Bank : Evolution Role and Function.
14. International Finance and Development in the Third World : A Balance Sheet.

प्रश्न पत्र चतुर्थ, ऐच्छिक समूह – स
अंतर्राष्ट्रीय संगठन एवं अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं की राजनीति

पाठ्यक्रम औचित्य

अंतर्राष्ट्रीय संगठन यह प्रश्न पत्र अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के उद्भव एवं विकास का आरंभ से लेकर वर्तमान समय तक का अध्ययन करता है। यह उन समस्याओं पर प्रकाश डालता है जो अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से सम्मुख आती है और उनके कार्य में रूकावट डालती है। संयुक्त राष्ट्र की संरचना एवं कार्यविधि का गहराई से अध्ययन किया जाना आवश्यक है और इसका विश्लेषण परिप्रेक्ष्य में किया जाना है कि क्या यह अपने शिल्पियों की अपेक्षा, आशा एवं आकांक्षा के अनुरूप खरा उतरा है। साथ ही शीतयुद्ध की समाप्ति के पश्चात राजनीतिक एवं सुरक्षा बिन्दुओं से सामाजिक, आर्थिक एवं मानवतावादी विषयों में परिवर्तन और इन आवश्यकताओं को सुगम

बनाने में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका विश्लेषित किया जाना है।

अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं की राजनीति – द्वितीय विश्व युद्धोत्तरकाल में विश्व में पुनर्निर्माण एवं विकास ने गंभीर समस्या पैदा की है। विशेषकर ब्रेटेन वुड्स एग्रीमेंट द्वारा जन्मी दो संस्थाओं विश्व बैंक एवं अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष से यह समस्या उदित हुई है। यह प्रश्न पत्र इन संस्थाओं की भूमिका, कार्य, महत्व और आवश्यकता को समायोजित करता है। यह इन संस्थाओं की संरचना एवं संगठन और आर्थिक विकास में इनकी भूमिका का समीक्षात्मक मूल्यांकन करता है। यह इन संस्थाओं द्वारा अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सफलता एवं असफलता का मूल्यांकन करता है। वैश्वीकरण की दृष्टि से ये संस्थाएं और उनके कार्य कितने महत्वपूर्ण है। इसका समीक्षात्मक विवेचन किया जाना आवश्यक है।

पाठ्यक्रम विषय वस्तु –

1. अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की प्रकृति एवं विकास।
2. अंतर्राष्ट्रीय संगठनों राष्ट्र–राज्य व्यवस्था और अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था का वर्णसंकर
3. राष्ट्र संघ
4. संयुक्त राष्ट्र संघ, संरचना एवं कार्य
5. विवादों का शांतिपूर्ण निपटारा और प्रवर्तन कार्यवाही
6. आर्थिक और सामाजिक विकास
7. उत्तर शीतयुद्ध काल में संयुक्त राष्ट्र
8. द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय व्यवस्था
9. अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं का विकास : युद्धोत्तर ब्रेटन वुड्स प्रणाली
10. द्वितीय विश्व युद्ध का प्रभाव एवं युद्धोत्तर पुनर्निर्माण
11. विश्व बैंक संरचना एवं विकासात्मक गतिविधियां
12. अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष संरचना एवं कार्यात्मक पुनरीक्षण
13. क्षेत्रीय विकास बैंक उद्भव भूमिका एवं कार्य
14. तृतीय विश्व में अंतर्राष्ट्रीय वित्त एवं विकास : स्थिति विवरण (बैलेंस शीट)

READINGS -

* R.C. Angell, The Quest for World Order, Ann Arbor, University of Michigan Press, 1979.
* Archer, International Organization, New York, St. Martin Press, 1975.
* P. Baehr and L. Gordenker, The United Nations in the 1990s, London, Oxford University Press, 1992.
* A.L. Bannett, International Organizations : Principles and Issues.

Englewood Cliffs NJ, Prentice Hall, 1977.

* I Claude, Changing United Nations, New York, Random House, 1967
* **S. Kumar (ed), The United Nations at 50 : An Indian View Delhi, UBSPD, 1995**
* W.H. Lewis (ed), The Security Role of The United Nations, New York, Praegar 1991.
* E. Luard, A History of the United Nations London Macmillan, 1989.
* H.G. Nicholas, The UN as a Political Institution, Oxford, Oxford University Press, 1975.
* K.P. Saxena, Reforming the United Nations : The Challenge Relevance, New Delhi, Sage, 1993
* The Stanley, Foundation's United nations of the next Decade 1997. Beyond Reform : The United Nations in a New Era.
* **A Yoder, Evolution of the UN System, New York, Random House, 1989.**
* D.N. Balaam and M. Beseth (eds) Reading in International Political Economy Englewood Cliffs NJ, Prentice Hall, 1996.
* E.A. Brelt, The World Economy Since the War : The Politics of Uneven Development, Basingstoke, Macmillan, 1985.
* Bretton Wood Commission, Bretton woods : Looking to the Future, Washington DC, Bretton Woods Commission, 1994.
* R. Burbach, O Nunez and B. Kagarlitsky, Globalization and its Discontents : The Rise of Postmoder Socialisms, London, Pluto, 1997
* **M. Carnoy, M. Castells, M. Cohen And F.H. Cardos (eds), The New Global Economy in the Information Age : Reflection on our changing World. University park PAPER KPennsylvania State University Press, 1993.**
* J. Dreze and A. Sen Hunger and Public Action, Oxford, The Clarendon Press 1989.
* P. Drucker, The New Realisties, Oxford, Heinemann, 1989.
* **F.Halliday, Rethinking International Relatins, Basingstoke, Macmillan, 1994.**
* N. Harris, Of Bread And guns : The World Economy in Crisis, Harmondsworth Penguin, 1983.
* J. Henderson and M. Castells (eds) Globa Restructuring and Territorial Development, London, Sage, 1987.
* N. Hirschman, National Power and the Structure of Foreign Trade, Berkeley, University of Clifornia Press, 1981.
* **P. Hirst and G. thompson, Globalization in Question : The International Economy and the possibilities of Governance, Cambridege, Polity, 1996.**
* A.M. Hoogvelt, Globalization and the Post Colonial World : the New

Political Economy of Development, Basingstoke, Macmillan, 1977.
* R.O. Brien, Global Financial Intergration : The End of Geography, London Printer, 1991.
* **G.Sorors, The Crisis of Global Capitalism, London, Little Brown, 1998.**
* **Surya Narayan Mishra : Public International Law, Central Law Agency, Allahabad.**
* *बैकुंठनाथ सिंह : अंतर्राष्ट्रीय संगठन, ज्ञानदा प्रकाशन (पी.डी.)*
* **Manju Subhas : United Nation Organisation, Gyanda Prakashan New Delhi.**
* S.C. Tewari, Genesis of the United Nations, Lakbharti, Allahabad.
* *एम.पी. राय : अंतर्राष्ट्रीय संगठन, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर*
* *गांधी जी राय : अंतर्राष्ट्रीय संगठन, जानकी प्रकाशन, पटना।*